रिकार्ड– हमारे तीर्थ न्यारे हैं..... ओमशांति प्रातःक्लास 21.1.68

ओमशांति। मीठे2 रुहानी बच्चों को रुहानी बाप बैठ समझाते हैं। गीता का अर्थ तो गीत बनाने वाले जानते नहीं हैं। जैसे गीता बनाने वाले भी इसके अर्थ को थोड़े ही जानते हैं। वेद–शास्त्र आदि जो कुछ भी भक्तिमार्ग में बनाई है उनकी रिजल्ट क्या निकलनी है समझते थोड़े ही हैं। वह तो समझते हैं बहुत भक्ति करने से भगवान मिलेगा। और बाप कहते हैं भक्ति से और ही दुर्गति होती है। भगवान ही आकर सदगति करते हैं। वह लोग सन्यासी ड्रेस पहनते हैं। बड़े2 तिलक देते हैं। तुमको तो झूठा तिलक नहीं देना है। तुमको आपे ही अपने पुरुषार्थ से अपने को राजतिलक देना है। यह तो बाप समझाते हैं कैसे तुम महाराजा राजा बनेंगे। पुरुषार्थ खूब करना है। हर एक अपने को तिलक देते हैं। अभी मनुष्य दुनियां में जो कुछ भी कांफ्रेंस आदि करते हैं समझते कुछ भी नहीं। जैसे पूछा है रिलीजन और साइंस में क्या कनेक्शन है। कहते हैं विश्व में शांति कैसे हो। प्रश्न तो पूछते हैं ;परंतु खुद तो जानते ही नहीं। तो उनको क्या कहेंगे? पीस कैसे हो सकती है खुद जानते ही नहीं। बस, जिसने कोई राय दी तो उनको पाई–पैसे की प्राइज दे देते हैं। उन्हों को यह तो पता ही नहीं है कि जो पीस स्थापन करने में मददगार बनते हैं उन्हों को विश्व की बादशाही मिलती है। यह तुम जानते हो हम श्रीमत पर चलने से विश्व के मालिक बनते हैं। वह भी सरासर श्रीमत पर कदम2 चलने से। पदम तब मिलेगी जब कदम2 श्रीमत पर चलेंगे। इसमें ही मेहनत है। कोई तो बहुत धीरे2 चलते हैं। फट से नहीं चल पड़ते। अपने मत पर भी चल पड़ते हैं। अभी कांफ्रेस आदि करते रहते हैं। तुम भल कितना भी समझावेंगे ;परंतु वह लोग अभी समझेंगे नहीं। साइंस घमंडी है माया। वह है माया। यह है प्रभु। प्रभु की तो जरूर विजय होगी इस संगम पर। वह कोई यह थोड़े ही समझेंगे कि उन्हों को यह ईश्वर समझाते हैं। भल तुम लिखो भी श्रीमत से हम यह समझाते हैं ;परंतु समझेंगे नहीं। श्रीमत किसको कहा जाता है। आजकल तो श्री बहुतों को कहते रहते हैं। कुत्ते–बिल्ले उन्हों को भी श्री कहते हैं। वह लोग तो श्रीमत मनुष्य को समझ लेंगे। ज्ञान तो है नहीं। मनुष्य अपने को ही श्री कहने लग पड़े हैं। आगे मिस्टी लिखते थे। अभी श्री लिखते हैं। इसलिए तुम लिखो शिवभगवानुवाचः अथवा परमपिता शिव। तो कुछ समझें। सिर्फ श्रीमत लिखने से समझ न सके। श्रीमत वास्तव में होती ही है भगवान की। पत्थर बुद्धि मनुष्य समझते ही नहीं। यह भी ड्रामा में उनका पार्ट है। कांफ्रेंस आदि करते रहते हैं ;परंतु खिरतील कुछ भी नहीं। कहते हैं विश्व में शांति हो। यहां हो कैसे सकता? आत्माएं जब उपर में हैं तो पीस है। तुमको समझाना है एक तो पीसफुल है निराकारी दुनियां, दूसरा वर्ल्ड में पीस है सतयुग में ही रहती है। जो पीस अभी बाप ही स्थापन कर रहे हैं। बाकी अनेक धर्म खलास हो जावेंगे। सतयुग में तो पीस ही पीस है। वह है पीसफुल वर्ल्ड। यह तुम समझाय सकते हो ;परंतु तुमको तो अला (अलाउ) करते नहीं हैं। अभी देरी है। इसलिए उड़ाते रहेंगे। यह तो तुम बच्चे ही जानते हो हम विश्व में पीस स्थापन कर रहे हैं। तुम बच्चे घर के बच्चे हो तो बाबा–बाबा कहते रहते हो। बाबा कहने से तुम्हारी बुद्धि में कोई लौकिक बाप नहीं आवेंगे ;क्योंकि तुम हो गए हंस। मोती चुगने वाले। वह बगुले हैं पत्थर चुगने वाले। ज्ञान रत्न हैं ना। ग्रहाचारी के लिए भी मुडी पहनते हैं ना। तुम्हारे उपर तो अभी ब्रहस्पत की दशा बैठी है। तुम जानते हो हम विश्व के मालिक बनेंगे। जो बहुत फर्स्ट क्लास चलते हैं उन पर कहेंगे ब्रहस्पत की दशा। फिर अचानक ही माया का तूफान आ जाता है तो कहते हैं बाबा खुशी का नशा कुछ कम दिखाई पड़ता है। कमाई में भी ऐसे होता हे। दशायें बदलती रहती हैं। कोई तो लिखते बाबा काला मुंह कर दिया। क्षमा करो। बाप कहेंगे राहू की दशा बैठी। विकार है ही राहू की दशा। इस समय सारे विश्व पर राहू की दशा है। पहले2 तुम सुख में आते हो ता तुम पर ब्रहस्पत की दशा रहती है। अभी ब्रहस्पति की दशा तो सभी पर है। फिर उनमें भी नम्बरवार हैं। वृक्षपति भगवान बैठ पढ़ाते हैं।

बच्चे अपनी अवस्था से खुद भी समझ सकते हैं हमारे पर अभी बृहस्पत की दशा है। बाबा के दिल पर चढ़े हुए हैं। जानते हैं यह बाबा तख्तनशीन होगा। हम बाप के दिल पर चढ़े तो जरूर तख्त पर भी बैठेंगे। कोई समझते हैं भल हम बच्चे तो हैं ;परंतु तख्त पर नहीं बैठेंगे। ....समझ सकते हैं तो कुछ भी काम नहीं करते। इनको खिलाओ, पिलाओ, पिछाड़ी को जाकर नौकर बनेंगे। बहुत मेहनत करनी है वहां। झट पूछूंगा कितने को आप समान बनाया है। ब्राह्मणी बहुतों को मेहनत कर ले आती है। समझते हैं बाप रिफ्रेश करेंगे। यह तो सुप्रीम टीचर भी है ना। पहले2 है सुप्रीम नालेजफुल गॉड। सेकेंड नम्बर में फिर यह है। यह बड़ी वंडरफुल बातें हैं। मनुष्य तो एक ही बात नहीं जानते। ईश्वर कैसे आकर नई दुनियां की स्थापना करते हैं। राजयोग सिखलाते हैं जो कुछ भी प्रश्न पूछते हैं खुद तो जानते ही नहीं। तुम समझावेंगे तो बुद्धि में कैसे आवेगा? कितनी मेहनत है। शिवबाबा इस समय जो करनीघोर हो आये हैं बिचारों पास है ही क्या? भक्तिमार्ग में ईश्वर अर्थ दान–पुण्य करते हैं ना। अभी तो ईश्वर सम्मुख है। आगे यह थोड़े ही समझते थे दान–पुण्य आदि करने से 21जन्म लिए मिलेगा। यह अभी तुम समझते हो हम जो कुछ करेंगे हमको 21 जन्म लिए रिटर्न में मिलेगा। यह बेहद का बाप सम्मुख है। अभी तुम समझते हो भक्तिमार्ग में ईश्वर अर्थ करते थे उसका कैसे हिसाब–किताब चलता था। ईश्वर को दिया फिर रिटर्न मिलता है। तो उनको देना थोड़े ही कहना चाहिए। ईश्वर कंगाल थोड़े ही है। वह तो सौना कर रिटर्न करते हैं। यह भी पहले से ही ड्रामा में नूंध है। यह बना बनाया बेहद का ड्रामा है। इसको कोई भी नहीं जानते। वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी रिपीट एक्युरेट। जो भी तुम देखते हो सबका ड्रामा में पार्ट है। यह भी धीरे2 समझना है। फट से नहीं। समझाने वालों में भी नम्बरवार हैं। हर एक की अपनी2 अवस्था है। कोई थर्डक्लास ब्रह्माकुमारी किसी अच्छे पढ़े–लिखे को मिल जाती है ,प्रश्न का रेस्पांड पूरा नहीं दे सकती तो एक के कारण सभी ब्रह्माकुमारियों की इज्जत चली जाती है। कहेंगे यह ब्रह्माकुमारियां क्या समझाती हैं? ऐसे ही चले जावेंगे। दिल हट जावेगी। ऐसे बहुत होते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है। खुद तो अपन को बहुत अच्छा समझते हैं ;परंतु यह तो बाप ही और अनन्य बच्चे ही जान सकते हैं। बाबा का खयाल था शिवजयंती पर बच्चों को समझाते रहें। कैसे तुम परिक्रमा निकालो। कब आया? क्या आकर किया? यह लोग देवताओं के मूर्ति को नहीं मानते हैं। तुम तो स्थापना कर रहे हो। देवता धर्म की। अभी तो अनेक धर्म हैं ना। कितने ढेर मत–मतांतर ,डार, टार–टारियां, टारियों के भी ... .हैं। अभी झाड़ वृद्धि को पाये पूरा हुआ है। सभी अपने नशे में हैं। अभी बाप द्वारा तुम सब कुछ जान गए हो। सब के आक्युपेशन को तुम जानते हो। यह भी बाप ने समझाया है शिव अलग है, शंकर अलग है। शंकर का तो कोई पार्ट ही नहीं। ऐसे नहीं ....बाप उनको कहेंगे कि सबको मारो। कहते हैं शंकर की आंखें खुलने से प्रलय हो जाती है। ऐसी कोई बात नहीं। झूठ माना झूठ.....गीता में भी झूठ। भगवानुवाच ही रांग कर दिया है तो बाकी सभी रांग हो जाता है। अभी तुमको रात–दिन इसी पर ही विचार–सागर–मंथन करना है। इस एक बात में ही तुम्हारा(तुम्हारी) विजय होनी है। बेहद के बाप की बायोग्राफी और बच्चे की बायोग्राफी में तो रात–दिन का फर्क। बाप के बदली बच्चे का नाम डाल दिया। बाप कहते हैं तुम तो महामूर्ख हो। तुमको यह भी समझ नहीं है कि गीता का भगवान कौन है। तुम कृष्ण के लिए समझते हो तो कहते हैं वह तो अमर है। सर्वव्यापी है। जिधर देखो कृष्ण ही कृष्ण। तुम कहेंगे यह तो उल्लू–पाजी है। यह भी ड्रामा में हर एक को पार्ट मिला है। आत्मा कब विनाश को नहीं पाती। तुम इस सारे झाड़ को जान चुके हो। आगे सत्यनारायण की कथा सुनाते थे। समझते थोड़े ही थे। अच्छा, नारायण बनूंगा। फिर प्रजा कैसे बनेंगे? बिल्कुल ही बेसमझ की कथायें हैं। कितने दंत कथायें हैं। अभी तुम थोड़े ही सुनेंगे। अभी तुम जानते हो बाप जो सत्य है वह हमको (नर)

से नारायण बनाते हैं। गीता में भी भगवान राजयोग सिखाते हैं। मनुष्य कैसे सिखलावेंगे? जो पास्ट हो जाता है उसका फिर भक्तिमार्ग में वर्णन होता है। देवताएं(देवताओं) से बड़ा तो कोई हो न सके। देवी–देवता धर्म की स्थापना शिवबाबा ने ही की है। अभी वह धर्म है नहीं। यह है ही इररिलीजियस। अनराइटियस, इनलॉफुल (अनलॉफुल)। पूछते हैं विश्व में शांति कैसे हो? भला कब हुई थी? प्रश्न पूछने वाला खुद नहीं जानते तो अनारी(अनाड़ी) ठहरे ना। बाप कहते मैं परमधाम से आय तुम बच्चों को पढ़ाता हूं। मैं हर 5000वर्ष बाद आता हूं। यह भी ड्रामा है ना। अभी और सभी धर्म है। बाकी जो धर्म न है उनकी स्थापना हो रही है। चित्रों पर तुम अच्छी रीत समझाय सकते हो। यह जब धर्म था तो दूसरा कोई धर्म न था। तुम जानते हो तो समझाते हो ना ;परंतु यह समझते नहीं हैं कि इन्हों को समझने वाला जरूर कोई है। यह ड्रामा का चक्र फिरता रहता है। जैसे नार में कगनी भरती है, खाली होती है ना। तुम सब हो किंगनी। आधा कल्प भरते हो फिर खाली होने लग पड़ते हो। फिर बाप भरने आते हैं। अभी तुम समझते हो हम आत्माएं पढ़ रही हैं। परमात्मा बाप पढ़ाते हैं। शरीर बिगर तो आत्मा कुछ कर न सके। आत्मा निकल जाय दूसरा शरीर लेती है। तो बाकी शरीर मुर्दा हो जाता। ब्राह्मण खिलाते हैं तो उसमें भी आत्मा को बुलाते हैं। समझो किसकी स्त्री मर गई तो आत्मा को निमंत्रण देते हैं। उनके आगे सब कुछ रखते हैं। आगे ब्राह्मण में आत्मा आती थी। यह सब ड्रामा में नूंध है। शरीर छोड़कर नहीं आते हैं। स्त्री की आत्मा समझ ब्राह्मण को खिलाते हैं। साहुकार लोग तो जेवर आदि भी पहनाते हैं। अब वह तो जेवर ब्राह्मण को मिल जाता है। उन्हों की आजीविका देखो कैसा होता है। यह सब है भक्तिमार्ग। भारत में किने (कितने)मेले लगते हैं। वह हैं मैला होने के मेले। वहां तो ऐसा कोई मेला लगता ही नहीं। वहां सदैव नैचुरल खुशी रहती है। यहां है आर्टिफीशियल खुशी अल्पकाल लिए। बाप तुमको लक्स देते हैं। लक्स सोप भी होता है ना। तुम भी बाप को याद करने से कितना साफ हो जाते हो। आत्मा की सारी मैल निकल जाती है। सभी पाप मिट कर कंचन बन जाते हैं। आत्मा कंचन बनी तो काया भी कंचन मिले। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। ऐसे बाप पर तो बलिहार जाना चाहिए। तुम गाते थे बाबा जब आप आवेंगे तो हम आप पर बलिहार जावेंगे। आप से ही वर्सा लेंगे। मेरा तो एक दूसरा न कोई। और कोई को याद न करो। यह शरीर भी पुराना है। अब हम जाते हैं बाबा के पास। इस शरीर से नष्टोमोहा हुआ तो सबसे हुआ। आत्मा समझती है अब बाबा आया हुआ है हमको प्योर होना है। इस शरीर को भी भूलना है। छी2 दुनियां से वैराग्य। यह है बेहद का वैराग्य। बच्चे जानते हैं हम जावेंगे नई दुनियां में। यह पुरानी दुनियां खतम हो जावेगा। बाबा साथ ले जावेंगे। फिर जब आवेंगे तो बाबा साथ थोड़े ही देंगे। फिर आपे ही पार्ट में आना है। यह सभी बातें समझाते फिर भी कहते हैं मामेकम् याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। बाबा सभी के नब्ज़ से फील कर सकते हैं। इनको कितनी खुशी होगी। योग बिगर आत्मा खुशी में आवेंगे ही नहीं। अभी पुरुषार्थ चलता रहता है। जब विनाश होगा तब रेस बंद होगी। यह पुरुषार्थ सिवाय बाप के कोई सिखला नहीं सकते हैं। कितना मीठा बाबा है। इन पर तो कुर्बान जाना चाहिए। गरीब बहुत कुर्बान होते हैं। साहुकार को हृदय विदीर्ण होता है। वह आवेंगे नहीं। कहेंगे हमके तो सभी सुख है। बाप भी समझते हैं यह ड्रामाप्लेन ही ऐसा बना हुआ है। कोई का दोष नहीं है। मेरा भी ड्रामा में पार्ट है। भक्ति में धक्के खाते2 बैटरी एकदम डिस्चार्ज हो गई है। तब ही फिर मैं आता हूं। कल्प पहले मिसल मुझे भी सर्विस करनी ही है। नथिंग न्यू। बच्चे समझते हैं अच्छी पढ़ना हमारा फर्ज है। जैसे कल्प पहले पढ़े थे। राजधानी स्थापन हुई थी वैसे ही अब हो रही है। बाबा को जरा भी फिक्र नहीं है। फिक्र तो इनको होना है ;क्योंकि यह पुरुषार्थी है। बड़ा कहावना बड़ा दुःख पावना. .....वह तो है ही बड़े ते बड़ा बाबा। इनको कितना माथा मारना पड़ता है। कितने हंगामे होते हैं। समाचार तो सब आते हैं (ना)। लिखते ही हैं शिवबाबा केअर ऑफ ब्रह्मा। यह जैसे कि बाबा की पोस्ट ऑफिस है। अच्छा, गुडमार्निंग।